शोधार्थी : **सुशील कुमार**
शोध-निर्देशक : प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह
विभाग : हिन्दी
विषय : स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य पर 1857 की क्रान्ति के प्रभाव का विश्लेषण

शोध-सार

1857 की क्रान्ति आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण घटना है। '57 की क्रान्ति ने न केवल समूचे विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा, बल्कि अनेक देशों को साम्राज्यवादी ताकतों के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा भी दी। '57 की क्रान्ति में भारतीयों में पनप रही नई चेतना और अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्त होने की छटपटाहट दिखाई देती है।

भारत में अंग्रेज़ों के आने का मकसद ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार करके भारतीय बाज़ार और अर्थव्यवस्था पर एकाधिपत्य जमाना था, ताकि वे यहाँ से अधिक से अधिक धन कमा सकें। इसीलिए अंग्रेज़ों ने भारत में अपनी एक सेना खड़ी की, ताकि भारतीय उनका विरोध न कर सकें। अंग्रेज़ जब भारत में सामरिक और राजनैतिक दृष्टि से मजबूत हो गए, तो उन्होंने अपनी उपनिवेशवादी और गुलाम बनाने वाली नीतियों के तहत देशी शासकों के साथ पूर्व में की गई संधियों को तोड़ डाला और देशी सामन्तों और ज़मींदारों से वसूल की जाने वाली 'मालगुजारी' की राशि में बेतहासा वृद्धि कर दी। दूसरे, अंग्रेज़ों भारतीयों के साथ 'साम-दाम-दण्ड-भेद' सहित सभी प्रकार की नीतियों का प्रयोग करके उन्हें अपने अधीन कर लिया। इन सबका जन प्रिय देशी शासकों और साधारण जनता पर विपरीत प्रभाव पड़ा।

अंग्रेज़ों ने भारत पर अपना आधिपत्य कायम कर लिया और '57 से पूर्व भारतीयों ने उनका कोई विरोध नहीं किया, ऐसा बिल्कुल नहीं है। '57 से पूर्व ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की साम्राज्यवादी और शोषणपूर्ण नीतियों के विरुद्ध भारतीयों ने समय-समय पर कई विद्रोह किए। इनमें प्रमुख हैं- संन्यासी विद्रोह, वहाबी विद्रोह और सन्थाल विद्रोह आदि। '57 से पूर्व हुए अधिकांश विद्रोहों का मकसद न सिर्फ़ कम्पनी की, बल्कि देशी सामन्तों और ज़मींदारों की भी गुलामी से मुक्त होना था। लेकिन इन विद्रोहों को अंग्रेज़ों ने दबा दिया।

'57 के बाद नवजागरण आन्दोलन के राष्ट्रवादी नेताओं और साहित्यकारों ने इस बात को जान लिया था कि जब तक हम आज़ाद नहीं होंगे, तब तक न तो हमारी और न ही हमारे देश की उन्नति होगी। इसी से 1857 के बाद हिन्दी पत्रकारिता के ज़रिए देश की उक्त

समस्याओं के साथ-साथ राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और स्वतन्त्रता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया गया। 1857 के बाद हिन्दी पत्रकारिता के केन्द्र में जहाँ देश की आज़ादी, ग़रीबी, शोषण, साम्प्रदायिकता और एकता जैसे प्रश्नों की एक लंबी शृंखला थी, वहीं वर्तमान हिन्दी पत्रकारिता के केन्द्र में 1857 और उससे सम्बद्ध अनेक विवादों को सुलझाने की कोशिश की गई है। साथ ही, '57 से जुड़े उन पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है जिनको अभी तक हाशिए पर रखा गया था। 1857 की क्रान्ति ने न केवल तत्कालीन हिन्दी साहित्य को, बल्कि स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य को भी प्रभावित किया। स्वतन्त्रता से पूर्व 1857 पर केन्द्रित अधिकांश रचनाओं के केन्द्र में सत्तावन की क्रान्ति और उसमें हिस्सा लेने वाले भारतीय ही रहे हैं। जबकि '57 पर केन्द्रित स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी की रचनाओं में उक्त घटनाओं के चित्रण के साथ-साथ तत्कालीन भारत की राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति हुई है।

1947 में देश आज़ाद हो गया। लेकिन स्वातन्त्र्योत्तर भारत में भी भ्रष्टाचार, शोषण, अत्याचार, दमन, साम्प्रदायिकता और गरीबी आदि समस्याएँ कमोबेश बनी रहीं। अतः 1857 पर केन्द्रित स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी की रचनाओं में सन् सत्तावन और तत्कालीन भारत की राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के चित्रण के बहाने प्रकारान्तर से समकालीन भारत की भी समस्याओं को उठाया है।

1857 के स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यिक विमर्श में न केवल '57 के सशस्त्र जन-संघर्ष तथा तत्कालीन परिस्थितियों को, बल्कि समकालीन भारत की तमाम समस्याओं और उसके कारणों को भी समझने की कोशिश की गई है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में 1857 पर केन्द्रित रचनाओं में जितनी मुखरता से अंग्रेज़ों की उपनिवेशवादी नीतियों और '57 के अनेक पहलुओं को व्यक्त किया गया है, उतनी ही मुखरता तत्कालीन लोक-साहित्य में मिलती है। 1857 केन्द्रित स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी की रचनाओं में '57 के चरित्र, कारणों और उसके बिखरने के कारणों को भी प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। यहीं यह भी कहना ग़लत नहीं होगा कि हिन्दी के तत्कालीन परिष्कृत साहित्य ने जिन विषयों पर चुप्पी साध ली या दबे स्वर में कुछ थोड़ा बहुत ही कहा, उन विषयों पर लोक कवियों ने निर्भीकता से अपने विचार व्यक्त किए हैं। अतः 1857 के स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यिक विमर्श में हिन्दी के तत्कालीन और समकालीन साहित्य के समानान्तर लोक-साहित्य को भी देखने की आवश्यकता है। तभी हम 1857 के सशस्त्र जन-संघर्ष और तत्कालीन देश की राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझ सकते हैं।